Sem. 6, DSE-3

Page No:
Date: / /

माखनलाल चतुर्वेदी के काव्य में राष्ट्रीय चेतना

हिन्दी साहित्य में प्रारंभ से ही राष्ट्रीयता एक प्रमुख प्रवृत्ति के रूप में रेखांकित ~~किया~~ जाती रही है। किन्तु, आधुनिक काल में यह एक ज्वार के रूप में प्रस्फुटित हुई। अंग्रेजी शासन की पराधीनता के विरुद्ध भारतीय जनता की एकजुटता ने हिन्दी साहित्यकारों में राष्ट्रीयता का ज्वार भर दिया। भारतेन्दु से लेकर गुप्तजी, दिनकर, सुभद्राजी ऐसे अनेक कवियों ने अपने काव्य में राष्ट्र-भावना को सबसे ऊपर रखा। ~~ऐसे~~ ऐसे ही कवियों में 'एक भारतीय आत्मा' के रूप में ख्यात माखनलाल चतुर्वेदी का नाम है। स्वतंत्रता-संग्राम में सक्रिय भागीदारी करते हुए चतुर्वेदीजी ने युग की राष्ट्रीय भावधारा को अपनी काव्यप्रतिभा के शंखनाद से प्रखर और सशक्त बना दिया।

"माखनलाल चतुर्वेदी की वाणी राष्ट्र के मर्म की वाणी है" – प्रो॰ नवल किशोर गौड़ की यह पंक्ति उनके काव्य का दर्पण है। वस्तुतः उनके काव्य में अनन्य देश-प्रेम और निश्चल समर्पण की भावना है। 'पुष्प की अभिलाषा' उनकी सर्वाधिक चर्चित कविता रही, जहाँ वे पुष्प की ओर से मध्ययुगीन मूल्यों का निषेध करते हैं और मातृभूमि-प्रेम और उसके बलिदान को स्वीकार करते हैं —

"मुझे तोड़ लेना वनमाली, उस पथ में देना तुम फेंक।
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने, जिस पथ जायें वीर अनेक॥"

कवि माखनलाल की कविताओं में अनुभूति, भावना, आदर्श, त्याग, राष्ट्रप्रेम, समाजकल्याण आदि का बड़ा महत्व है। गांधीजी की सत्य-अहिंसा, तिलक की बलिदान-भावना और कवि रवीन्द्र की मानवपूजा आदि इनके काव्य के आधार तत्व हैं। 'हिम किरीटिनी', 'हिमतरंगिनी', 'युगचरण' जैसे कविता-संग्रहों में कवि की रचनाएँ राष्ट्रदेवता की अर्चना-पूजन करती हैं। कवि ने स्वयं से भी अधिक स्वदेश से प्रेम किया है। 'कैसी है पहिचान तुम्हारी' कविता में वे कहते हैं — "प्राण, कौन से स्वप्न दिख गये,
जो बलि के फूलों खिलते हो।"

माखनलालजी की 'कैदी और कोकिला' जैसी कविता जेल में लिखी गयी। वह उस युग की जेल-यातना की कहानी है। उनके समय की संस्कृति में स्वाधीनता आन्दोलन की गूँज सर्वत्र है। कवि चतुर्वेदी की राष्ट्रीयता में जो लगन, मुग्धता तथा अनन्त जलन है, जनमुक्ति के लिए जो छटपटाहट है, वह अनुपम है। डॉ० नगेन्द्र ने लिखा है, "नवीन और दिनकर का स्वर आक्रामक है...और उधर सियारामशरण की कविता में अहिंसा का, करुणा का प्राधान्य है। आत्मबलिदान की भावना से प्रेरित माखनलाल चतुर्वेदी की राष्ट्रीय चेतना इन दोनों सीमांतों के मध्य प्रस्फुटित हुई है। इन कविताओं में ओज और करुणा अभिव्यक्त रूप से अनुस्यूत है।" —

"क्या? देख न सकती जंजीरों का गहना?
हथकड़ियाँ क्यों? यह ब्रिटिश-राज का गहना,
× × × × × × × × ×
दिन में करुणा क्यों जगे, रुलानेवाली,
इसलिए रात में गजब ढा रही आली?"

माखनलालजी के काव्य में बलिदान, समर्पण, विद्रोह, गांधीवादी दृष्टि, वीर पूजा तथा प्रेम-आराधना के स्वर प्रमुख है। राष्ट्रवादी पत्रकार के रूप में 'कर्मवीर' पत्र में लिखे उनके लेखों ने अंग्रेज सरकार की नींद उड़ा दी थी। कवि का मानना था कि विदेशी शोषण और अत्याचार के खिलाफ जिस व्यक्ति के हृदय में ज्वाला न धधके तो वह कैसा भारतीय है? —

"द्वार बलि का खोल चल भूडोल कर दे,
× × × × × × × × ×
दो हथेली हैं कि पृथ्वी गोल कर दें
रक्त है या है नसों में क्षुद्र पानी।"

चतुर्वेदीजी की भाषा में सरलता, सजीवता एवं प्रभावोत्पादकता है। उसमें उर्दू शब्दों का भरपूर प्रयोग है। कवि के रूप में उन्होंने सर्वत्र आत्मबलिदानी भावना के विविध रंग भरे हैं। कवि की राष्ट्रीय चेतना निश्चय ही, समग्रता में, राष्ट्रप्रेम, विप्लव का आह्वान, मरण की ज्वाला एवं पीड़ित मानवता की पीड़ा है। राष्ट्रकवि दिनकर ने ठीक ही लिखा है — "वे शरीर से योद्धा, हृदय से प्रेमी, आत्मा से विह्वल भक्त और विचारों से क्रांतिकारी हैं।"